इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी।
निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाय कांई नार जी।। २ ।।

यहां इसमें आदि-अन्त, चल-अचल, उजाला-अंधेरा, निराकार-आकार तथा स्त्री-पुरुष कुछ नहीं है।

नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी।
आवन गवन नहीं अंग इन्द्री, लख न कांई निरमान जी।। ३ ।।

नाम, स्थान, गुण, निर्गुण, पख (अंतःकरण), आना, जाना, अंग, इन्द्रियां, देखने में जो आता है, वह कुछ नहीं है।

इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी।
भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सब्द सोहं आकास जी।। ४ ।।

रूप नहीं है, रंग नहीं है। तेज, ज्योति, दिन, रात, भूमि, अग्नि, जल, वायु, आकाश और सोऽहं शब्द, आदि कुछ भी नहीं हैं।

इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, गिनान नहीं बल गंध जी।
फूल न फल नहीं मूल बिरिख, भंग न कांई अभंग जी।। ५ ।।

यहां रस, धातु, तत्व, ज्ञान, बल, सुगंधि कुछ भी नहीं है। फूल, फल, जड़, पेड़, मरण, जीवन भी नहीं हैं।

अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन्य मंडल विस्तार जी।
एणें ठेकांणे बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी।। ६ ।।

इस शून्य मण्डल का विस्तार परदे के रूप में अखण्ड बेहद के दरवाजे तक है। इस ठिकाने पर काल निरंजन शक्ति हथियार बांध कर बैठी है।

ए बल जोजो बलवंती नूं, एहनो कोई न काढे पार जी।
अनेक उपाय कीधां घणें, पण कोए न पोहोंता दरबार जी।। ७ ।।

इस बलवंती काल निरंजन की शक्ति को देखो। इसका किसी ने पार नहीं पाया है। इस कारण ही कोई परमधाम नहीं पहुंचा।

कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनो बोली मारे प्रताप जी।
आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी।। ८ ।।

यहां निराकार तक कोई नहीं पहुंचा है। इसके नाम से बड़े-बड़े हार जाते हैं। यह पांच तत्व इसी की छाया है और इस तरह से यह शून्य मण्डल बना है।

॥ प्रकरण ॥ ६९ ॥ चौपाई ॥ ८७२ ॥

मूलगी चाल

हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार।
सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार।। १ ।।

अब जो बेहद की आत्मा होगी वह जागकर देखेगी। वह हद और बेहद (झूठ और सत) को अलग-अलग करके बेहद के दरवाजे खोलेगी।

Nijanand App

एहमां वासना पांचे प्रगट थई, रची रामत देखाडी रूडी पेर।
कारज करीने अखंडमां भलसे, अछर सरूप एहनूं घेर।। २ ।।

इसमें अक्षर ब्रह्म की पांच वासनाएं हमको अच्छी तरह खेल दिखाने के लिए प्रगट हुईं जो अपने कार्य समाप्त करके अखण्ड योगमाया में समा जाएंगी जहां अक्षर के हृदय में सबलिक ब्रह्म है।

रामत जोवा वाला ते जुआ, ते आगल वाणी थासे विस्तार।
माया देखाडी ने वार उघाडी, जावूं अछर ने पार।। ३ ।।

इस खेल को देखने वाले अलग हैं। इनका विस्तार वाणी में आगे किया जाएगा। इन्होंने माया का खेल देखकर, बेहद के दरवाजे खोलकर अक्षर के पार जाना है।

सास्त्र साधोनी वाणी सर्वे, आगम भाखी छे अनेक।
ते सर्वे आंही आवी ने मलसे, तेहना वंचासे ववेक।। ४ ।।

बड़े-बड़े साधुओं और शास्त्रों की वाणी में इनके आने की भविष्यवाणी की गई है। अब सब भविष्यवाणियां यहां आकर मिलेंगी और उनका सारा भेद खुलेगा।

छर थी तीत अछर थया, अने अछरातीत केहेवाय।
आपणने जावूं एणें घरें, इहां अटकलें केम पोहोंचाय।। ५ ।।

क्षर ब्रह्माण्ड से आगे अक्षर और अक्षर से पार अक्षरातीत कहे जाते हैं। हमें उसी घर में चलना है जहां अटकल से नहीं पहुंचा जा सकता।

पार सुख थयूं एणी पेरे, हजी रमो तमें छाया माहें।
तमने फरी फरी आ भोम आडी आवे, तमें कामस न टालो क्यांहें।। ६ ।।

हे साथजी! इस तरह से तुम्हारे घर का सुख अलग है। अभी तुम माया में खेल रहे हो और यह झूठी भूमि बार-बार रास्ते में रुकावट डालती है। तुम अपने विकार (माया की चाहना) क्यों नहीं निकालते हो?

हूं संमंधी माटे बार उघाडूं, आपवाने सुख सत।
खीजी वढीने हंसी तमारा, फरी फरी वालूं छूं चित।। ७ ।।

मैं अपने निसबती सुन्दरसाथजी को अखण्ड सुख देने के लिए दरवाजा खोलती हूं। गुस्सा करके, लड़ करके, हंस करके तुम्हारे चित्त को बार-बार माया से हटाती हूं।

तमें राखी रदेमां अंधेर, ओलाडवा हींडो छो संसार।
एणी पेरे उवट चढ़ाय नहीं, जवाय नहीं पेले पार।। ८ ।।

तुम अपने हृदय में माया को बसाकर, माया की आग को बुझाना चाहते हो। इस औघट रास्ते पर इस तरह से चलकर उस पार नहीं जाया जाएगा।

सतगुर संग करे आप ग्रही, वचने धमावे निसंक।
रस थई कस पूरे कसोटी, त्यारे आडो न आवे प्रपंच।। ९ ।।

सतगुरु की शरण, संगति करने से वह तुम्हारा हाथ पकड़कर अपनी वाणी से तुम्हारे संशय मिटाएंगे और कसनी से निखारकर तुम्हें कंचन बनाएंगे। तब यह माया का प्रपंच तुम्हारे आड़े नहीं आएगा।

Nijanand App

तमसूं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार।
कायर ने कंपावे ए बल, बीक ने भ्रांत विचार।। १० ।।

फिर तुमसे लड़ने यह माया की नशीली नींद, लोक-लाज और अहंकार आएंगे। इनकी ताकत से कायर डर जाएंगे और डरकर संशय में पड़ जाएंगे।

तमें गिनान तणो अजवास लईने, उपलो टालो छो अंधेर।
पण मांहेलो सूतो निद्रा माहें, तो केम जाए मननो फेर।। ११ ।।

तुम तारतम वाणी का उजाला लेकर इस ऊपर के अज्ञान को तो हटाते हो, किन्तु तुम्हारे अन्दर का मन विकारों से भरा है। इस तरह से तुम्हारे मन के संशय कैसे मिटेंगे?

ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास।
त्यारे पार ब्रह्म नों पार थकी, तमें आहीं देखसो अजवास।। १२ ।।

जब तारतम वाणी के वचनों से तुम अपनी आत्मा को जगाओगे, तब तुम वाणी के उजाले को देखोगे। तब यहां बैठे-बैठे पारब्रह्म को पार से देखोगे।

हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें।। १३ ।।

अब जिसने हमें यह न्यामत दी है उसके चरण को चित्त में रखो। यह सतगुरु तुम्हारी नींद उड़ाकर सपने को भगा देंगे। तब जहां तुम बैठे हो वहां जाग जाओगे, अर्थात् मूल मिलावा में जाग जाओगे।

हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह।
सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह।। १४ ।।

अब तुम इन सतगुरु के चरणों की कृपा से अखण्ड सुख पाओगे, इसलिए सावचेत होकर सब अंगों से इनकी सेवा करो।

महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण।
चरण सों चित पूरो बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे निसबती सुन्दरसाथ! सुनो, शब्दों से परे उस पारब्रह्म को पहचानो। जब तक तुम्हारे तन में प्राण हैं तब तक उनके चरणों में चित्त लगाओ।

।। प्रकरण ।। ७० ।। चौपाई ।। ८८७ ।।

किरंतन आखिर के
राग श्री आसावरी

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान।। १ ।।

श्री प्राणनाथजी की अंगनाएं परमधाम की रहने वाली हैं। इनके मूल तन चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) में हैं। इनका बड़ा मरातबा है, स्वयं पारब्रह्म इनकी सिफत करते हैं।

सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार।
साथ सेवक मलायक, पावे दुनियां सब दीदार।। २ ।।

यह बारह हजार ब्रह्मसृष्टि अर्श अजीम से खेल में उतरी है। इनके साथ खूबखुशालियां और अनेक फरिश्ते आए हैं। इनका सब दुनियां अब दर्शन करेगी।

Nijanand App